व्यापारिक बैंक–अर्थ एवं कार्य
(Commercial Bank - Meaning & Functions)

वर्तमान युग में 'बैंक' एक सर्वप्रचलित एवं सर्वोपयोगी शब्द है, जिसके अर्थ से साधारणतया सभी अवगत हैं, किन्तु इसके इतिहास की तरफ जाएँ तो पता चलता है कि 'बैंक' शब्द की व्युत्पत्ति इटेलियन भाषा के 'बंकों' (BANCO) शब्द से हुई हैं, इटली में लोग बैंचों पर बैठकर मुद्रा परिवर्तन का कार्य करते थे। कालांतर में जो फ्रांसीसी भाषा के 'बैंके' (BANK) में बदलता हुआ अंग्रेजी भाषा में 'बैंक' (BANK) कहा जाने लगा। कालान्तर में 'बैंक' शब्द का प्रयोग मुद्रा का लेन–देन करने वाली संस्थाओं के लिए किया जाने लगा।

एक अन्य धारणा के अनुसार 'बैंक' शब्द की व्युत्पति जर्मन भाषा के 'BANCK' (बैंक) शब्द से हुई हैं जिसका अर्थ होता है – ''सम्मिलित स्कंध कोष (Joint Stock Fund) अतः बैंक शब्द की उत्पत्ति के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता।

आधुनिक बैंकिंग का विकास यूरोप में हुआ था, तत्पश्चात यह समूचे विश्व में फैल गया।

बैंक की परिभाषा :–

बैंक शब्द का अर्थ एवं कार्य स्पष्ट करते हुए अनेक अर्थशास्त्रियों ने इसकी परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं, जो इस प्रकार हैं–

फिण्डले शिराज के अनुसार – ''बैंकर, वह व्यक्ति फर्म या कम्पनी हैं जिसके पास व्यवसाय के लिए ऐसा स्थान हो जहाँ मुद्रा अथवा करेंसी की जमा द्वारा साख का कार्य किया जाता है और जिसकी जमा का ड्राफ्ट, चैक या आर्डर द्वारा भुगतान किया जाता है।''

क्राउथर के अनुसार :– ''बैंक का कार्य अन्य लोगों से ऋण लेकर बदले में अपना ऋण प्रदान करके मुद्रा का निर्माण करना है।''

भारतीय बैंकिंग कम्पनीज एक्ट (1949) :–

''बैंकिंग से तात्पर्य ऋण देने अथवा विनियोजन के लिए जनता का धन जमा करना है, जो माँग करने पर लौटाया जा सकता है तथा चैक, ड्राफ्ट अथवा अन्य प्रकार की आज्ञा द्वारा निकाला जा सकता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट है कि – बैंक एक ऐसी संस्था है जो अपने ग्राहकों को धन सम्बन्धी समस्त लेन–देन की सुविधा प्रदान करती है।

व्यापारिक बैंक के कार्य :–

व्यापारिक बैंक का कार्यक्षेत्र वर्तमान युग में बहुत विस्तृत हो गया हैं। ये बैंक अपने ग्राहकों को अनेक प्रकार की सुविधाऐं प्रदान करते हैं। वित्तीय समाशोधन के अतिरिक्त, ग्राहकों को बीमा, लॉकर सुविधा, निवेश आदि के अवसर भी प्रदान करते हैं। परम्परागत रूप से बैंकों के द्वारा किये जाने वाले प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं –

1. जमाएं स्वीकार करना
2. ऋण प्रदान करना
3. साख निर्माण
4. एजेंसी सेवाऐं
5. अन्य सेवाऐं

1. जमाएं स्वीकार करना :–

व्यापारिक बैंकों का प्रमुख कार्य अपने ग्राहकों की जमाएं स्वीकार करना है। ग्राहक अपने चालू अथवा बचत खातों में अपनी छोटी–छोटी बचतें जमा करवाता हैं। बैंक ऐसी छोटी–छोटी बचतों से एकत्रित कोषों पर अपने ग्राहकों को ब्याज अदा करता है।

बचत खाता:–

इस प्रकार के खाते छोटे बचतकर्ता अथवा नौकरीपेशा लोग बैंकों में खुलवाते हैं। इन जमाओं पर बैंक एक निश्चित दर से ब्याज भी अदा करता है। इसमें ब्याज दर कम होती है।

चालू खाते :–

इस प्रकार के खाते व्यापारी अथवा उद्योगपति बैंकों में खुलवाते हैं, जिनका दैनिक नकद लेन देन अधिक होता है।

अवधि जमाएँ :–

बैंकों द्वारा एक निश्चित अवधि के लिए जो जमाएँ स्वीकार की जाती हैं उन्हें अवधि जमाएँ (Fixed Deposit) कहते हैं, इन पर ब्याज की दर ऊँची होती है।

मांग जमाएँ :–

जबकि माँग जमाऐं, वे जमाऐं होती हैं जो ग्राहक के द्वारा किसी भी समय माँगे जाने पर बैंकों को अदा करनी पड़ती है।

वर्तमान दौर में आम लोगों को बैंकिंग सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु 'प्रधानमंत्री जन धन योजना' के अन्तर्गत शून्य राशि पर भी खाते बैंकों द्वारा खोले जाते हैं। इन खातों में नियमित लेन देन करने वाले ग्राहकों को बैंक 5000 रु. तक की अधिविकर्ष सुविधा प्रदान करते हैं।

2– ऋण प्रदान करना :–

व्यापारिक बैंकों का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य ऋण प्रदान करना है। बैंक अपने ग्राहकों को ऋण सुविधा प्रदान करता है। ये बैंक मुख्यतः गृह , शिक्षा , विवाह एवं वाहन इत्यादि हेतु ऋण प्रदान करते हैं। बैंक अपने ग्राहकों की जमाओं से एकत्रित राशि से ही साख सृजन का कार्य करता हैं। ऋण चुकाने के लिए बैंकों द्वारा अपने ग्राहकों को एक निश्चित समयावधि का विकल्प प्रदान किया जाता हैं। प्रायः परिसम्पति हेतु दिए जाने वाले ऋण दीर्घकालीन ऋण होते हैं। बैंक द्वारा कमजोर वर्गों के लिये विभिन्न सरकारी योजनाओं के तहत सरल ऋण उपलब्ध करवाये जाते हैं।

अधिविकर्ष –

सुविधा के अन्तर्गत व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को उनके चालू खातों पर अधिविकर्ष सीमा उपलब्ध करवाती है। अल्प समय के लिए ग्राहक उस सीमा तक जमा धन से अधिक राशि निकलवा सकते है। यह सुविधा बैंक अपने प्रतिष्ठित साख वाले व्यवसायी वर्ग के ग्राहकों को ही उपलब्ध करवाती है।

3. साख निर्माण –

व्यापारिक बैंक का सबसे महत्वपूर्ण कार्य साख सृजन है। अन्य वित्तीय संस्थाओं के समान उनका उद्देश्य भी लाभ कमाना होता है। बैंक अपने जमाधारकों से प्राप्त जमाओं से एकत्र राशि को ऋण के रुप में अन्य ग्राहकों को उपलब्ध करवाती है, जिस पर नियत दर से ब्याज भी वसूल करती है। इसे ही बैंकों की साख निर्माण प्रक्रिया कहते हैं, जिसे हम आगे विस्तार से जानेंगे।

4. एजेन्सी सेवाएं –

व्यापारिक बैंकों द्वारा ग्राहकों को ऐजेन्सी सेवाएं भी उपलब्ध करवाई जाती है। बैंक चैक, विनिमय बिल, ड्राफ्ट इत्यादि को स्वीकार / जमाकर अपने ग्राहकों को ऐजेन्सी के रुप में वित्तीय सुविधा प्रदान करते हैं। व्यापारिक बैंक अपने खाताधारकों की सम्पत्ति और वसीयत के कार्यकारक (executor) और न्यासी (Trustee) के रुप में भी कार्य करता है।

वाहक चैक (Bearer Cheque) –

इस प्रकार के चैक का नकद भुगतान बैंक चैक प्रस्तुत करने वाले वाहक को कर सकता है।

रेखांकित चैक (Cross Cheque) -

इस प्रकार के चैक का भुगतान बैंक चैक में अंकित नाम वाले व्यक्ति के खाते में करता है।

5. अन्य सेवाएं :–

(I) इंटरनेट बैंकिंग :– व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 24 घंटे अपनी सेवाएँ देने के लिए इंटरनेट बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं। इसके द्वारा ग्राहक घर बैठे अपने खातों से विभिन्न सेवाओं का शुल्क भुगतान आसानी से कर सकते हैं। इंटरनेट बैंकिंग के द्वारा ऑनलाइन शॉपिंग हेतु घर बैठे भुगतान किया जा सकता है। इस हेतु ग्राहकों को बैंक से Login ID और Passward जारी किया जाता हैं जो पूर्णतया गोपनीय रखना होता है।

(ii) ATM सुविधा :– व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 24 घंटे नकद आहरण की सुविधा प्रदान करने हेतु सार्वजनिक स्थानों (बस स्टैण्ड, रेल्वे स्टेशन, हॉस्पिटल, हवाई अड्डों) पर ATM मशीन उपलब्ध करवाते हैं। कोई भी ग्राहक अपने ATM कार्ड से प्रतिदिवस निर्धारित सीमा तक राशि आहरित कर सकता है। इसके अतिरिक्त ATM नकद हस्तांतरण व खाते में नकद शेष की जानकारी भी उपलब्ध करवाता है। इसका पूरा अर्थ ATM - Automated Teller Machine है। यह पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत मशीन होती है जो बैंक के सर्वर से जुड़ी होती है।

(iii) मोबाइल बैंकिंग :– वर्तमान युग में 'स्मार्टफोन' का प्रचलन बढ़ने से व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 'मोबाइल ऐप' के माध्यम से भी बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हैं। ग्राहक अपने बैंक से सम्बन्धित एप गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सुविधा का लाभ उठा सकता है। इंटरनेट बैंकिंग की तरह एक User ID और Passward के जरिये ग्राहक सभी प्रकार के भुगतान अपने मोबाइल से कहीं भी कभी भी कर सकता है।

(iv) लॉकर सुविधा :–व्यापारिक बैंक निश्चत शुल्क पर अपने ग्राहकों को कीमती सामान को सुरक्षित रखने के लिए अपने बैंक में लॉकर सुविधा प्रदान करता है। लोग इसमें कीमती जेवरात, जमीन के कागजात व कानूनी दस्तावेज आदि सुरक्षित रखते हैं।

(v) क्रेडिट कार्ड सुविधा :– व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 'क्रेडिट कार्ड ' के माध्यम से भी बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हैं, इसके अन्तर्गत व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को उनके खातों पर एक निश्चत साख सीमा में कार्ड द्वारा भुगतान की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं। क्रेडिट कार्ड के माध्यम से कहीं भी कभी भी अल्प समय में ऑन लाइन भुगतान कर सकते हैं।

व्यापारिक बैंक द्वारा साख सृजन

आधुनिक बैंकिंग प्रणाली में साख सृजन का महत्वपूर्ण स्थान है। देश के आर्थिक विकास में बैंकों की बड़ी भूमिका है। जहाँ बैंक एक ओर जनता से प्राप्त छोटी–छोटी बचतों के जमाकर्ता के रूप में कार्य करता है वहीं यह इन छोटी – छोटी बचतों से तैयार जमाओं से साख निमार्ण का कार्य करते हुए उत्पादक कार्यों के लिए ऋण प्रदान करता हैं। अब हम समझने का

बैंक साख का निर्माण किस प्रकार करते हैं।

साख का निर्माण :–

व्युत्पन्न जमाओं द्वारा साख सृजन :– साख निर्माण व्यापारिक बैंकों का प्रमुख कार्य है। अन्य बैंकों की भांति उनका उद्देश्य भी लाभ कमाना होता है। बैंक मुद्रा अथवा साख मुद्रा का संबंध बैकों के पास जमा की गई उन छोटी–छोटी बचत राशियों से आंकता हैं, जो चैक द्वारा निकलवाई जा सकती हैं। ये राशि माँग पर देय होती है, अतः इन्हें मांग जमा कहते हैं। इस प्रकार की माँग जमाओं के बढ़ने से ही अपनी कुल जमाओं से कई गुणा अधिक उधार देकर साख मुद्रा का निर्माण करते हैं। इस प्रकार बैंक जितना अधिक ऋण देता है उतनी ही अधिक साख जमाएँ उत्पन्न होती हैं और अधिक ऋणों का निर्माण होता है। इसलिए कहा जाता हैं –''ऋण जमाओं को उत्पन्न करते हैं और जमाएँ ऋणों को जन्म देती हैं।''

प्रो. होम के अनुसार – ''व्युत्पन्न जमा का निर्माण ही साख का सृजन होता हैं।'' इस प्रकार व्यापारिक बैंक उनके पास जितनी राशि जमा के रूप में प्राप्त होती हैं उससे कई गुणा अधिक साख सृजन कर देते हैं। प्रो. होम के अनुसार बैंक जमाएं दो प्रकार की होती हैं – प्रारम्भिक बैंक जमाएं तथा द्वितीय व्युत्पन्न जमाएं।

प्रारम्भिक जमाएँ :– वे जमाएँ होती हैं जो जमाकर्ता द्वारा वास्तविक मुद्रा के रूप में बैंक में जमा की जाती हैं।

व्युत्पन्न जमाएँ :– वे जमाएँ हैं जो बैंक प्रारम्भिक जमाओं से प्राप्त राशियों से ऋण खाता खोलकर ऋण राशि जमा करता है।

अतः एक प्रारम्भिक जमा से कई व्युत्पन्न जमाएँ उत्पन्न होती जाती हैं। ये व्युत्पन्न जमाएँ साख जमाएँ कहलाती हैं।

साख सृजन की प्रक्रिया :–

बैंकों के साख सृजन की प्रक्रिया को निम्नांकित उदाहरण द्वारा आसानी से समझा जा सकता हैं –

चरण 1– मान लीजिए कि किसी व्यापारिक बैंक में प्रारम्भिक जमा 10000 रुपये होती है। बैंकों का नकद कोषानुपात 20% है तो बैंक ऋण प्रावधानों के अनुसार अपनी प्रारम्भिक जमा का 20% (यानी 2000) रखकर शेष राशि 8000 रुपये का ऋण दे सकता है। यदि बैंक किसी व्यक्ति को 8000 रुपये का ऋण जारी करता हैं। यह साख जमा पुनः ऋण के रूप में दी जा सकती हैं। इस प्रकार प्रत्येक ऋण जमा को जन्म देता है।

चरण 2– अब 8000 रुपये में से बैंक पुनः 20% (यानी 1600) नकद कोष में रखकर शेष राशि 6400 रुपये का ऋण दे सकता है। इस प्रकार बैंक दूसरे किसी अन्य व्यक्ति को 6400 रुपये का ऋण स्वीकृत कर देता है और उसके खाते में राशि जमा कर देता है।

चरण 3– अब इन 6400 रुपये में से बैंक पुनः 20% (यानी 1280) नकद कोष में रखकर शेष राशि 5120 रुपये का ऋण दे सकता है। इस प्रकार बैंक तीसरे किसी व्यक्ति को 5120 रुपये का ऋण स्वीकृत कर देता है और उसके खाते में यह राशि जमा कर देता है।

इस प्रकार प्रारम्भिक जमा 10000 रुपये की जमा राशि से बैंक साख सृजन की यह प्रक्रिया चालू करते हैं और व्युत्पन्न जमा के माध्यम से बैंक प्रारम्भिक जमा से भी अधिक धन राशि की साख प्रदान कर देते हैं। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक बैंक अपनी प्रारम्भिक जमाओं का पाँच गुणा (20% आरक्षित अनुपात) साख सृजन नहीं कर देती।

साख सृजन की इस प्रक्रिया को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए उपर्युक्त उदाहरण को तालिका में दर्शाया गया हैं–

तालिका 18.1

बैंक द्वारा साख सृजन की प्रक्रिया			
	परिसम्पत्तियाँ		देयताएं (राशि रुपयों में)
चरण	जमाएं	नकद कोष (20%)	प्रदत्त ऋण / व्युत्पन्न जमाएं
I	10000	2000	10000-2000 = 8000
II	8000	1600	8000-1600 =6400
III	6400	1280	6400-1280 = 5120
IV	5120	1024	5120-1024 = 4096
V	4096	819.2	4096-819.2 = 3276.8
	.....	.....	.....
योग	Σ Td = 50000	Σ Rr = 10000	Σ Dd = 40000

कुल व्युत्पन्न जमाएं = कुल जमाएं – कुल कोषानुपात

(संकेत में) $\Sigma Dd = \Sigma Td - \Sigma Rra$

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि व्यापारिक बैंक किस प्रकार प्रारम्भिक जमा से व्युत्पन्न जमाएँ उत्पन्न कर अपनी साख की राशि को कई गुणा बढ़ा देते हैं। बैंकों द्वारा कितनी व्युत्पन्न जमाएँ सृजित की जाएंगी यह साख गुणंक पर निर्भर करता है। उपर्युक्त उदाहरण में 20% CRR है अर्थात 1/5 हैं। अतः कुल साख सृजन 50000 रुपये का होगा। क्योंकि जमा गुणक $= \frac{1}{RR_r}$ जहां RR_r = आवश्यक रिजर्व अनुपात है। जमा गुणक एक बैंक द्वारा जमा प्रसार को निर्धारित करता है। उपरोक्त उदाहरण में बैंक के पास 10000 रू. जमाएं हैं, और CRR 20% है तो साख गुणक होगा।

$$\frac{1}{RR_r} = \frac{1}{20\%}$$
$$= \frac{1}{\cdot 20}$$
$$= \frac{100}{20} = 5$$

और साख निर्माण होगा $\frac{1}{RR_r} \times D = 5 \times 10{,}000$
$= 50{,}000$

इसी प्रकार व्युत्पन्न जमाएं हम कुल जमाओं में से कुल कोषानुपात के राशि घटाने पर प्राप्त कर सकते हैं।

व्युत्पन्न जमाएं = कुल जमाएं – कुल कोषानुपात
50,000 रू. – 10,000 रू.
= 40,000 रू.

साख सृजन की सीमाएँ :– बैंक असीमित मात्रा में साख सृजन नहीं कर सकते। अनेक आर्थिक दशाओं का इस पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बैंकों की साख सृजन की प्रक्रिया की कुछ सीमाएँ इस प्रकार हैं –

1. बैंकिंग विकास का स्तर :– जिन देशों में बैंकिंग सेवाएं पर्याप्त विकसित नहीं है वहां बैंकों की साख सृजन क्षमता सीमित होती है।
2. आम लोगों की बैंकिंग की आदत :– देश के लोगों में बैंकिंग आदतों का भी साख सृजन क्षमता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।
3. व्यावसायिक व औद्योगिक विकास का स्तर :– जो देश उच्च औद्योगिक विकास को प्राप्त कर चुके हैं वहां बैंक लेन–देन विकसित होने से साख सृजन क्षमता अधिक होती है।
4. केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति :– सरल मौद्रिक नीति देश में साख सृजन को बढ़ावा देती है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

◆ भारतीय बैंकिंग कम्पनीज एक्ट (1949) :– ''बैंकिंग से तात्पर्य ऋण देने अथवा विनियोजन के लिए जनता का धन जमा करना है, जो माँग करने पर लौटाया जा सकता है तथा चैक, ड्राफ्ट अथवा अन्य प्रकार की आज्ञा द्वारा निकाला जा सकता है।''

◆ बैंकों द्वारा एक निश्चित अवधि के लिए जो जमाएँ स्वीकार की जाती हैं उन्हें अवधि जमाएँ (Fixed Deposit) कहते हैं, इन पर ब्याज की दर ऊँची होती है।

◆ माँग जमाऐं वे जमाऐं होती हैं जो ग्राहक के द्वारा किसी भी समय माँगे जाने पर बैंकों को अदा करनी पड़ती हैं, ऐसी जमाओं पर ब्याज दर कम होती है।

◆ व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 24 घंटे अपनी सेवाएँ देने के लिए इंटरनेट बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करते हैं। इसके द्वारा ग्राहक घर बैठे अपने खातों से विभिन्न सेवाओं का शुल्क भुगतान आसानी से कर सकते हैं।

◆ ATM - Automated Teller Machine होती है। यह पूर्णतया कम्प्यूटरीकृत मशीन होती है जो बैंक के सर्वर से जुड़ी होती है।

◆ वर्तमान युग में 'स्मार्टफोन' का प्रचलन बढ़ने से व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को 'मोबाइल ऐप' के माध्यम से भी बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हैं।

◆ व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को उनके खातों पर अधिविकर्ष सीमा उपलब्ध करवाती है, अल्प समय के लिए ग्राहक उस सीमा तक जमा धन से अधिक राशि निकलवा सकते हैं।

◆ व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को क्रेडिट कार्ड के माध्यम से भी बैंकिंग सुविधा प्रदान करते हैं इसके अन्तर्गत व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों को उनके खातों पर एक निश्चत साख सीमा में कार्ड द्वारा भुगतान की सुविधा उपलब्ध करवाते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) व्यापारिक बैंक का प्रमुख कार्य है –
(अ) जमाएं स्वीकार करना तथा ऋण प्रदान करना
(ब) नोट निर्गमन करना
(स) सरकार के बैंकर का कार्य
(द) बैंकों को आर्थिक सहायता पहुँचाना

(2) निम्नलिखित में से कौनसे जमा खाते में सर्वाधिक ब्याज दर देय है –
(अ) चालू खाता (ब) आवर्ति जमा खाता
(स) बचत खाता (द) स्थायी जमा खाता

(3) ATM सुविधा क्या है –
(अ) 24 घण्टे बैंक काउंटर खुला रखना
(ब) बैंक से तत्काल ऋण सुविधा
(स) स्वचालित कम्प्युटरीकृत मशीन से 24 घण्टे बैंकिंग सुविधा
(द) बैंक का सामान्य टैलर काउण्टर

(4) मोबाइल बैंकिंग के लिये आवश्यक है–
(अ) स्मार्टफोन (ब) इंटरनेट
(स) बैंक अकाउंट (द) उपर्युक्त सभी

(5) कौनसी योजना के तहत लोग अपना खाता बैंक में निशुल्क खुलवा सकते हैं –
(अ) प्रधानमंत्री स्वरोजगार योजना
(ब) प्रधानमंत्री जन धन योजना
(स) प्रधानमंत्री राहतकोष योजना

(द) राष्ट्रीय बचत योजना

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. व्यापारिक बैंक की परिभाषा लिखिए।
2. व्यापारिक बैंक के कोई दो कार्य लिखिए।
3. अधिविकर्ष सुविधा को समझाइये।
4. इंटरनेट बैंकिग क्या है?
5. **ATM** का पूरा नाम लिखिये।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. बचत खाते और चालू खाते के अंतर को समझाइये।
2. व्यापारिक बैंक के प्रमुख कार्य लिखिये।
3. मोबाइल बैंकिंग क्या है? समझाइये।
4. वर्तमान में बैंकों द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली कोई दो सेवाओं का वर्णन कीजिये।
5. व्यापारिक बैंकों द्वारा की जाने वाली साख सृजन की कोई दो सीमाऐं लिखिये।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. व्यापारिक बैंक की परिभाषा लिखिए। व्यापारिक बैंकों के कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. साख सृजन किसे कहते हैं? व्यापारिक बैंकों द्वारा की जाने वाली साख सृजन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाइये।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
अ	द	स	द	ब